

। सूचना ।

[बैकर चिरित काव्य]

अंग्रेज प्रत्यक्ष के अवधारणा में (१२०८) छुट्कियों की हातों पर लोकविजय घटता है। शारावण-
ज्ञाने के उपर थेके अंग्रेज प्रत्यक्ष के आवायाति इतिहास (११५१) पर्याप्त
काल-पर्याप्त के आमदा। बालाहेश्वरे इतिहास में शारावण के 'मध्यम' वले खाकी।
त्रिपुरा आमल के हजार थेके बलि 'आमुखिक' था।

छुट्कियों का पाठीन-योग्यता के बाबले क्रमिकल, इतिहास, चरित्रों
वले चोटी होते हैं। उदकांड-नामियों, बाहारियों, आरिथ-इन्हिन्हों-
शाही, डारिथ-इ-मोरारकशाही, छुट्क-इ-काहानप्रीयों आदि। बाबले
आशुचित्रित, आकरणनाम। आहानप्रीयों का आशुचित्रित अद्भुत असंख्य ग्रन्थों
में शुट्टोडवक्ष प्रत्येक करा थेते थाएं। बिल समकानीन इतिहास के बाबों
बालाहेश्वरे ऐसे प्रत्येक रचनार आकरण देखा थाएं न। बहक उत्तर-उत्तराते
'बालटे' काबों बालगाथात बच्चान येते, उत्तरवर्षाहेत 'मुद्रीवाल बालटे'
(ऐसे काव्य परे तो गृह शमाण करने) आदि। 'बिश्वालहेत बालटे'
अद्भुत काव्य आवाय। नामानीयों देखो प्रतिलिपि हिन्दू 'वर्षद', इतिहास-
संकाय निर्मनरूप।

बद्यामे बालानी हिन्दू कोनोक्षण राष्ट्रियता हिल न। से छुट्कियोंके
वा शरदती राष्ट्रियतिक घटनाके 'ताप्य' 'नियति' वा दैवनियिक कर्म होते
हेते नियेहिल। परवर्ती कालेर पाठीन, योग्य वा त्रिपुरा शक्ति विक्रम
तार काहे अभ्युपतावे शौक्त होते हैं। ए इतिहास अपेक्षारे होते
नह। बहिमत्त त्रिक्षेत्र लियेहिलन वे बालाहेश्वरे विवाद हिल :

"हलोकेर शब्दीय अमवत देवतार अप्सरातार याँते, हैरान
ताहारियों विवाद। अस्तु उत्तर नाम 'देव' अनुत्तर नाम 'हूर्वर'।

[ताहारा] देवताहै सर्वत्र शाकात् कर्ता विवेचना करेन।"

बालगृह, बालानी, लिखेर हेते बालानी ऐसे 'विवाद' अनेक देखि हिल।

बालाहेश्वरे यद्यमें सर्वापेक्षा दृष्टीय बाकी चैत्रवर्षे (१४८३—१५००)
हेते शाहेर बालाकाले (१४२०—१५१२) चैत्रवर्षे नववोले आविर्भूत

०२

बाला चिरित शाहित

हो 'आन' आदि। 'कर्वी' प्रतेरे हेते जाकिके लेट 'साम-प्रावा' वले योवणा
करने। तिनि बाट्टनारक हिलने न। एवं-लालक अप्पेरे तो शरि।
हिन्दूसमाजे बाबा सनातनी इतिहास नप्राव नव्वुव उपेक्षित आदि। सनातनात
होतिहिल तामेर 'हति हति बोलाहिल। आच ताले एवि' तिनि कोल दिलेन।
तिनि उत्तरवलाल शाहूक आच द्वारा नव्वुनी सनातने प्रथाक विक्रम
द्वाकियेहिलेन। सनातनात बाकिनेव बैकर सनातनात करे नियेहिलेन।
तो बाकिनेव काहे बदन काजे न न रहेहेन, डांग-लालन यलतान हाले
शाहेर कर्मताप करे बैकर सेवारात गहन करेहेन। अद्येतदारी बालाहेश्वरे
शार्वत्रों तो बाकिनेव काहे प्रथाक वर्ण करेहेन, उत्तरवलाल
गवणति अतीप्रति तो एनावलाले नियेके एत नने गणेहेन। ए बदनेर
वह एनाव उत्तरेक करा थेते पारें।

काजेहै देखा बाबा प्रेमिनकार सदय बालाहेश्वरे विवाट एक अंशके
चैत्रवर्षे नहून आवेदे आनदे बालाहेश्वरे आतिहे कूलेहिलेन। ये
शाहेर बाबो बडो बोनेर प्रकाश थटे, लैरे नाहेहेत उत्तर बाकिक ओ
चिह्न समया आतिह चेतनाके अवलाले नाढा जिहे आगिये देव। लैरे
बडो-बोनेव बाल उत्तर शूलाव बोगा हते अट्टेन, बदित हन देवकम
महिमाय। चैत्रवर्षे तो समकाले निष बीयनेव आलोके वह बीयनके
आलोकित, तुक करे झूलते प्रेमेहिलेन। उत्तर तो ब्रह्मवर्ष करे
प्रत्तै बित्त होहे नहून ताबेव कावा, पर ओ शहीत। चैत्रवर्षे
सम्बार्के ब्रौजनारेव बहवा ऐसे शूले प्रविधानयोग्य।

"बालाहेश्वर बालालिर यदा हहितेरै तो चैत्रक अविहाहिलेन। तिनि तो
विद्या-काठांड देखो दाम करितेन न। तिनि तो समत दानवके आनदार
अविहाहिलेन। तिनि विष्वात दानवप्रेमे वस्त्रमिके ज्योतिर्वी करिया
तुलियाहिलेन।

आमल करा, बालाय देहै एकनिन सदत्त एकाकार हैवार जो हैवाहिल।
ताहै कृदक्षणा लोक देखिया चैत्रके कलमीर काना हूँडिया अविहाहिल।
विष किंहै बित्ते प्रातिह न। कलमीर काना भातिहा देल। प्रेमिहे
देविते अमि एकाकार हैव ये, आति हैव न, तुल हैव न, हिन्दू
मृत्युनानेव अतेव उहिल न। तुहू ताव यदन अतेव हैवते थाके उत्तर
तर्कवित्तरै शूलिनाति समत्तै अचिरां कापन आगन पर्तीव देखो वहस्त करिया

অবেল করে। চৈত্যন থখন পথে বাহির হইলেন তখন শালো মেশের গানেও এবং পর্ণক ফিরিয়া গেল। তখন এককৃতিহাসী বৈষ্ঠনি মুরজনা কোথাও ভাসিয়া গেল। তখন সহল কুমৰের অবস্থ হিজোল শহীদ কর্ত উচ্ছিত করিব। স্তুতি অবে আকাশে বালু হইতে লাপিল। বিষক্তে পারগুল করিবার অপ্রযুক্তি বলিয়া এক স্তুতি কৌর্তন উঠিল।^{১২}

তাই বলতে পারি ঐচেতনার আবিষ্টার বধার্থই শালো আভির চৈত্যন-চোঙ্গেয়। চৈত্যনদের সামাজিকের বহু উর্মে একজন অসাধারণ গৃহি হিলেন একস্থা সকলেই বৌকার করেন। কিন্তু সকলের চরিতকারেরা তাঁকে যেকে 'শৌরাণিক' অলোকিতায় পরিষ্কার করে দেখিয়েছেন, সেটা যেনে নিতে একালে অনেকেই ঘণ্টাগুল। চৈত্যনদের কীবন অবলম্বনে শহীদ মুরারি ওপু ও চৈত্যন-শারণ নিবানে সেনের পূর্ব করিকণ্ঠে পরমানন্দ শেন সংস্কৃতে মহাকাশ ও নাটক রচনা করেছেন।

উচ্চাবনশাল, গোতন, অয়ানশ, কুফানশ করিতাম ও ছড়ামনি দাস বাড়ো চাষায় চৈত্যনচরিত লিপিবদ্ধ করেন। বহু শুশকর্তা গোবাল বিষয়ক পথে রচনা করেন। সকলেই চৈত্যনদেরকে কলিযুগে প্রিকুকের অবস্থার বা প্রয়োজনকৃত রচনা করেছেন। মুরারি শুশ ও করিকণ্ঠে উভয়েই তাঁদের 'ঐচেতনচরিতামৃত মহাকাব্য' রচনাকালে গৌতার শৈক্ষক করিত 'ধৰ্ম বহা হি ধৰ্ম' গ্রাহক ও 'ঐমহত্ত্বাগবত' বর্ণিত কুফানোকাকে আবর্ণ করে এখন করেছিলেন। ভাগবতে বেমন কুক-পুরোকিৎ শব্দার অধ্যয়নে পুরোগুলিতে বেমন শিব-পার্বতী প্রশ়্নাক্ষেত্রে দেওয়া হয়েছে, তেমনি সামোদৃশ-মুরারির প্রশ়্নাক্ষেত্রে কোতুতে কর্তৃত রচনা করেছেন মুরারি শুশ। মুরারি শুশ তাঁর কাব্যে চৈত্যনদের অভানোলা অর্ধাং কুফানশণ, অলোল, পোলোভ, পিয়োভাম প্রচুরি বিশ্বাস নি লিলেও প্রসঙ্গগুলির উর্মেখ করেছেন।^{১৩}

মুরারি অধ্যেত কাব্যে চৈত্যনদের ভিত্তিগুলের উর্মেখ আছে।^{১৪} তিনি চৈত্যনদের কীবনের বে খটনাগুলি বিশুল করেছেন তাঁর পরবর্তীকালে সকলেই সেকলির শাব্দার করেছেন। মুরারি শুশ চৈত্যনদের অব খেকেই তাঁর উপর দৈববর্ণ আবোধ করেছেন। কালেই মুরারি অধ্যেত গুহে চৈত্যনদের মহাবরাহ 'কল ধারণ, (২/১০—১৮) চৈত্যনদের দুর্মিঠ হয়ার পূর্বে দেবগণ কর্তৃক পঞ্জীয় পর্ক বসনা (১/৫), হরিনামে কুঁচেরোঁজির বাবি আভোগ্য (২/১০), নিত্যানন্দকে অধ্যে 'বজ্রভূম' তাঁরপর 'কুনাকুরু' বন্দু রণ্ম বিহুবচ তত-

'ক্ষণাত' (২/১৭) গুণগতি প্রাতশক্তকে 'বৈদিয়াৎ বস্তুবস্তুত' কাশগুরনি (১/১০; ১/১০) প্রাপ্তি গৌণ। বাতাবিকভাবে বর্ণিত হয়েছে। কাব্যগানিতে চৈত্যনদের কীবনের প্রধান প্রধান খটনাগুলি সহ আর বিদ্যুত হয়েছে। অলোকিত অলোকগুলির মধ্যে কৃলো এবং আবারের পকে তৎকালীন একজন বৈষ্ণ দাস প্রাপ্তি পাঞ্জি-পরিচর শালু বহলালে সহজে হয়।

তাঁর দ্রুতগুলো, মাতাকে পাহাদ, লিঙ্ক, ঝুইবাট বিবাদ, বলগুহের তাঁগুড় প্রতি কৌতুক-কৌতুক, সংজ্ঞাপ, দেশবস্তু, সাধকজীবন দাশন, নীলাচল-লোল অত্যাপত্তিমালাকাঙ্ক্ষ সহই বিবৃত তথ্য। বৃক্ষ মনে দেও মুরারির কাবোই অলোকিতকা অশেক্ষেত্রে ক্ষয়। পরবর্তী সকলেই এই বাবহার করেছেন ও তাঁর উপর প্রচুর রং প্রতিয়েছেন।

চৈত্যনদের উর্মেখের প্রতিক্রিত করার প্রয়াস যে কালে শুশই প্রাচীব। তাঁর দ্রুশ কাব্যাত সকলেই চৈত্যনচক। তাঁকে কোনো চরিতকারই 'নড়কলে হেখেন নি, সকলেই প্রকৃত্যন্তে নামাবন্ধনশে দেখেছেন ও দেখিয়েছেন। সংগৃ বেগাপ তাঁর যানবস্তু প্রকাশিত হয়েছি, এমন কথা বলা আবশ্যের উক্তেক্ত নহ।

চৈত্যনদের বা অবেতাচার বা নরোত্তমের কীবন নিয়ে বে চরিত কাব্যগুলি বিচিত হয়েছে প্রেগলি কিয়দু শিলিয়ালে 'গোলিকেঙ্কি' বা 'সাপ্তাশারিক' শাহিদা হচ্ছে নাথ। চৈত্যন অসুরার্তী বৈষ্ণব সমাজ বৈষ্ণব ধর্মস্থানের মে বিনোদ অক্ষয় হেগেছেন, অজ্ঞের সকলেই তাঁদের অসুরণ চোখে দেখবেন আপা কোথা বাহু না। বৈকবেরা হাত্তা মাহিতে যোকুল প্রতকে একটি নতুন ধারা 'চরিত শাহিদা' অনেছেন একথা অবস্থীকোথ। চৈত্যনদের কীবকালেই তাঁর মহিমাকাশক চরিতশার্য রচনা কর হয়েছে। তক বৈকবেরা চরিতকাব্য রচনার মেনে নিয়েছিলেন 'বিশ্বামী বিলাপে কুক তকে বহসূর' মুর্রিভি। অবক পাকাতোও ধর্মপ্রকাশের চরিতবিহিমাবৰ্ত্তন রচনার অর্বাৎ Hagiographyগুলিতে অলোকিতকা, মহিমা প্রতিকোষ্ঠক অবিবাক পটনাট উপরাপনা পথেই বিষয়ান।^{১৫} পুরোপুর মহাযুগে কনশাধারণের মনে ধর্মস্থানের ম্পাকে শহ তকি ও প্রশ়্নশ অক্ষ হিল। ধূকিভিলিসের ইতিহাসের আবর্ণ তখন আর বেচে হিল না। 'Biography'র বিশিষ্ট লক্ষণ হল বাহি শাশবের ইতিবৃত্ত রচনা। সেবানে প্রতিবি সাম্র সাতজ চিহ্নিত হবে। কিন্তু Hagiography

वा Legends of the Saintsके देखा गया योगीश्विकारे एवं वा वर्षभवने उत्तिकारीयोगी नहीं हैं बल्कि वे भी उत्तिक हैं।^१

टैकर उत्तिकारी नामके अवैदे कथा यही अवैद यिक है वह ना, उत्तिक नाम टैकर उत्तिकारी है अलोकिक घट्टामा वा अतिकारी उत्तिकारी उत्तिकारी वहाँ परिवारे मिथिलित हैं। योर्कोर याहुरके 'उत्तिकारी' वा उत्तिकारीप्रे उत्तिक घोले अलोकिक यहिया आहोम छाड़ा उत्तिक है वह कि कहे।

टैकरउत्तिक वा उत्तिक टैकर योर्कोर अलोकिकटा आहोम अस्त्रे अवैदी कथा उत्तिक है नने हह। युवावि उत्ति क बवि वर्ण्णित तात्त्वेर कावा वा नाटक लिखेहेन संस्कृत याहुराया, पूराण वा नाटके आहारे। पूराणे अलोकिक याहुरीय आहूर नक्कोरे। टैकरउत्तिक उत्तिका वा उत्तिक अविहोय कज युवावि वा वर्ण्णित वह यातितापूर्व आहोम करेहेन। किंवा यांला याहुर तुच्छावनवास, लोअन वा याहुनन्य देव टैकरउत्तिक योर्कोर लिखेहेन वा तात्त्वे प्रवर्तीकाले अवैद, नवोडव अविहि देव उत्तिकारा उत्तिक हैराह, लेउलि अकृतपक्षे हरे योर्कोर देव टैकरउत्तिक हातेत 'उत्तिकारा'। विहिय लोकिक वा अर्थ-प्रोत्तोकिक देवदेवीय देवन, देवना, देवी वा एवंतोहुरे याहुराया अविहोय योल आकाशात् एकवा मवलकावा उत्तिक कय। इले यत्न अविहिकेर नवाचव वा पूर्णा उत्तिक लिखेहेत पूर्णा अवर्तन व उक्कके कृपा वित्तवन मवलकावोर देवदेवीयप्रेर दृश्य उत्तिक-उत्तिक। टैकर उत्तिक अनेके तात्त्वेर कावाके मवलकावोर झाट्टो गळके चेत्तेहिलेन, टैकरउत्तिक, अवैदउत्तिक नाम तात्त्वे तात्त्वावह। अत् योर्कोर नह एहि पर्यावरे कावो देश। याव मवलकावोर देवदेवीयेत अमृतग टैकरउत्तिक-उत्तिक वा असीम देवदक्षि, अलोकिक वल-प्रवासे योर्कोरी पक्कके नवन वा तात्त्वे प्रश्नन करवाव अस्त्रो तुकाव। टैकरउत्तिकापदते तुच्छावन यास लिखेहेन:

येविया गर्विये अहू बद्रवे हकाव।

'मृणि मेहै मृणि मेहै' बोले याव याव।

एहि नहे यावा देला येवासेर यत्ते

'कि करिल येवानिया।' बोले अहकाव।

मृणि गूळ याव याव तात्त्वे तुहाव।

गूळ गूळ याव याव तात्त्वे तुहाव।

"याहावे वा पूर्णि उत्तिक याव याव।"

याहावे पूर्णि यावे देव उत्तिकाव।"

येवास शवित्रे देवने उत्तिकारीयोगी वल। टैकरउत्तिक उत्तिक आहेप नवलेन:

'गूळ उत्तिकारी देव येवानियु नव।'

तोव येहु यिका नाहे नव येव येव।'

पेव यो कठिते येवत्तुरवद्याता उत्तिकनि याकलेव मवलकावोर spirit व अवैदित नव। उत्तिकाराग्निते टैकरउत्तिक दृश्य यहाव एहि उत्ति यासावो हवेहे देव तिनिहे यिक, कामावि कृष्ण, यावावि याव, यित्तर्हावी यासन हैत्यावि। (यहु योर्कोर उत्तिक 'अत्तिकारी' कावोर इक्क अनेकोटी एहि यासनेर 'येवाव' वह याहाव अकाश करेहेन)। यद्या याव यावाविहे येवत्तुरवद्य निजेव दृश्य यासन यासावो हह:

यासिते अहू टैकर येव यासेप।

यहु कठनचि उत्ति योर्कोर यित्तेव।

यासावो अकाशान्य यासये कासिते।

योर्के ४० ५० येटो करे भाल मत्ते।

यासये येवाव योर यित्तेव ना यासे।

इहु कवाहेलू यासे तहु नाहि यासे।

अनेक यासाव योर देव यासेते येवने।

याहा यिका योरे येटो केसन यासाव।'

एग्नित यावे यांला मवलकावोर 'शाल्पाविक' देवदेवीय उत्तिक यार्यका कोराव?

विष।— मृणि नोर यास याव याव तात्त्वावते

याव तेव याहे तात्त्वे नाश तात्त्वावते।'

एहि यासनेर मृणित याहिते लात नेहे। एहि येहेव आपर्वेर कथा योड्या शत्तकेर लेवासे उत्तिक 'टैकरउत्तिक' कावो यावाव, नवहोले याव अत्ताचाव अग्ने योर्कोराकाठ यहु यावाव लेव याविय येव यत्तिक टैकरउत्तिक याके यासेहेन:

यासी याव याव याव याव याव याव।

मृणाला यासे काहे काहे यहु याव याव।

आमि तोर बहारा पेसिन् राजापाट।

सरापे काट्ठि तोर हडी खोडा छोट।

बहाने रघुपतीनि, रा शाहिराने इसकि यसलकावोर डोइरे उपक़।
बहानव लिखेहेन :

नाके थक रिल राजा रहे कानी छाडे।^{१२}

नरहरि उक्तवर्ती 'नरोत्तम विलास' कावोर अस्त्रप भावे देवकर्म रियोरी
अथापनेव शाहिराने बाहा रहे 'जगतो' राजा रघुपतिहेहेन :

सेहरे बद्धन खेडी राहते बद्ध लेय।

सद्गुरे रहते यहा कोरकूक देय।

दुधा अराम रैकलि रहे दृष्टेमति।

दैक्षन निलिनि तोर रहे अरोगति।

तोर दृउ काति रवि करि थान् थान्।

उदे से बद्धे दृष्ट रहे नदारान।

उदे दृष्टे अहर कि रिल तोरे शिक।

नरोत्तम अस्त्राह दैल तोरे वका।^{१३}

नरोत्तम विलासे वर्षित 'जगतो' कोरेव राजे 'प्रेमविलास' विष्णु चतुर्भव
कोरेव रिल आहे। 'जगतो'वर निभानव पडी आहोरी देवीर एति
निभावाका उने चतुरा वक्तेन :

आहोरी देवीरे तोरा कविलि रिङ्ग।

सेहे अपराहे तोरेव रहे यहाहः॥^{१४}

संक्षेप नुक्तकेर अर्द्धवाले इचित रुक्मिणी कविराजेव चैतुर्चरितामृत
(१९११) यह लोकोर दैक्षनेव रसराजे अकाव वड। राशनिक ए
आशापिक उक्तमुक्त एहे यहाहेहेव पूर्वोक्त लक्षणालि रहस्ये रास्ते।
अटेक विश्व कर्त्तव्य त्रिवाल गृहे डवानीपूर्का अवारि राशन ओ रुक्मिण
लेण्डेव अपराहे तिन रिल रहे सेहे विश्व कृष्णालोगे आकाश एन।
चैतुर्चरितेव करणा आर्णी करणे तिनि अस्त्राह वक्तेन :

आवे गापि अकरेवि तोरे उक्काहिम्।

कोति अम देहे तोरे कीराव राष्ट्राहेहु।

त्रिवासेवे कराहिलि अवानीपूर्कन।

कोति अम रहे तोरे रोरवे गळन।

पाहो न याहाविते योर एहे अवतार।

शाही नाहावि रुक्त कर्त्तु लक्षाव।^{१५}

एहे केहे मूरावि अथेव वर्तनाके अवलान कहलेत कुक्कास कविराज मूरावि-
अरुव वर्तनाके छाविये यक्कोल रद्दानाके अविकाले केहे यान लिखेहेन।

यसलकावाहेर रद्दाने कुक्कास कहलूत लिखेहिल ताव आहो एकठि
दृष्टोर पाही, निभानव शासेव 'प्रेमविलास' याहे मूलसान शासनकर्ता शेव थोर
शपनाल हेहु चैतुर्चरितेके 'आहा' प्रदर्श योवाचा करा हयेहे अप्पे
चैतुर्चरिते वक्तेन :

'आमि तोर आहा एहे आकाव अवण'।

डेलिवित दृष्टोरुपलि खेदे रद्दाहे झोडीरान हये रे, चैतुर्चरितकावालिते
चैतुर्चरितेव 'मान'वृप अलेका निभान 'कुक्कास' वल अवरा 'अवतार'वृप
प्रतिष्ठा एक चैतुर्चरितेव श्रवान उद्देश्य दिल।

मेला मेल दैक्षन जीवनी-कावातलिते शीता, जागरूक ओ अवार शूरापेव
डेलेव ओ अस्त्रप आक्षेत यसलकावोर spirit एवं form अलक्षित नव।
कावेहेव चैतुर्चरित वा अत्राव दैक्षन जीवनीशाके ग्रामापिक वले शौकाव
करा आमूलिक कावेव लाक कर्त्तव। 'तन ना अविद्याव अलोकिक घटनाव
वाहला यसाहुपेह एहे प्रवाहेव कावा वाचाविक।

किंवा रे 'चैतुर्चरितामृत' गोडीव दैक्षनेव यहामात्र गळ, मेलाने
वाहसेव शारंगोद ओ चैतुर्चरितेव रिकावेव रे एवना लिपिवह करा हयेहे
ताव श्वास्के मलेह एकाल कव कर्त्तवा। केनना ऐ वर्ना युक्तः कुक्कास
कविराज लिखेहेन कविराजमृतेव चैतुर्चरितामृत यसलकावोर (१९१२)
दाश्प शर्व देहे। अहेतुवाव रद्दाने ओ शारंगोदेव प्रदावेव कधा कपेशू
लिखेहेन। किंवा मेलामे उभानेव गृहक्तुकेव नद्यव करा आवा यास ना।
आहाडा वाहसेव शरंगोद अवात दृक्त उक्त एवाने चैतुर्चरितेव मुखे वक्तेन
हयेहेन। उक्कास कविराज विष्णु अवण दिलिहे अधार, यवालीवाव अहेव
परिक्षेपे शावा शारंगोद वा वाव वानीनव मांदाव। कुक्कास कविराज ऐ अले
मूलप्रदर्शने कवि राम्पुरेव इचित यसलकावा ओ नाटक खेदे गळण कवेहेन
एवं वामानन्देव शुभ रिले कृष्ण गोवारी कृत हविरकिवसामृतमिह ओ उक्कल-
नीलमध्य अदिकल एकाहाव वलिखेहेन।

चैतुर्चरितेव त्रिवासेवे प्रदर्श एतिह ययेहे अमन एहे शार्णनिक निवळ

জ্ঞান উৎসৱ প্রায়শিকভাবে। মুক্তির উপর, কবিকর্ণপুর, বৃত্তাবদ্ধনাম যে সহ ইত্যাদিতে মেঝের মধ্যে বাহ্যিক অবস্থা ও আনন্দের কাহা সমাপ্ত হওয়ে কথা শেষে। অথবাগত জটিল সম্ভব অবস্থার কাহা সমাপ্ত হওয়া।

কৃষ্ণপুর ক'ব্রিয়ের 'চৈত্যচরিতামৃত' কাহা এবং কোনি চরিতকারা রচনার উৎসুক স্মৃতি। বৃত্তাবদ্ধনের পোকারীগুলি কৃষ্ণ প্রভাবিত ও বাধাগত চৈত্যচরিতের নব প্রভাবিত প্রভাব, প্রতিক্রিয়া-ক্ষেত্রের ক্ষেত্র সাধানভাবে প্রভাবিত প্রভাব।

চৈত্যচরিতের নব-অবস্থাগত, সর্বাপের বৈকল্যের গহণ করেন। মুক্তির উপর, কবিকর্ণপুর, বৃত্তাবদ্ধন, লাজন, অবাদন বৃত্তপ্রয়োগের নামে স্মৃতি 'বৃত্তাবদ্ধন' প্রভ. মহিলা কানুণে। ইত্যাদি তরকে তিক পৌত্র করেন। 'চৈত্যচরিতামৃত' চৈত্যচরিতের দেহভাবের বহুব পরে ১১১-এ-১ স্মৃতির পরিচয়। কিন্তু কবিকর্ণপুর স্মৃতি নিখেজেন যে অবস্থানের প্রতি, নবসংকীর্তন প্রচার প্রভূতির সঙ্গেই চৈত্যচরিত। অতিক্রমে কৃষ্ণপুর সর্বাপের প্রভাবিতে 'বৃত্যে' এবং জ্ঞানাব চার ও অবকাশি ধোল করে প্রেমাদানকেই 'বৃত্যে' কাব রেখে নিখেশ ১১৫নে। কৃষ্ণপুরের কৃষ্ণের নিষিদ্ধ কিছ কিছ নয়, বৃত্তাবদ্ধনের পোকারীসে 'বাধাগত তর ও বাধনিক সিদ্ধান্তকে তিনি 'চৈত্যচরিতামৃত' রচনাম-প্রয়োগ করেছেন। চৈত্যচরিতের কৌবনহ অজ্ঞানাত্ম রচনা। তাই দুর ১-৬। তার মে উদ্বৃত সকল হয়েছে বলা জলে। মুক্তির উপর চৈত্যচরিতের পোকারীসে, প্রলাপ-উক্তি প্রভূতির বে ইতিঃ বেথে পিণ্ডিতের কৃষ্ণপুর তার সম্মুখ-স্বর্ণ বর্ণনা করেছেন।

কৃষ্ণের বিচার করে রেখেলে ১০৮চরিতামৃতে অথাগত অসামগত বহু পিণ্ডে অকলাপ কুবিকাল পুরুষাগত তথাকে নির্বিচারে এবং ক্ষেত্র-৭ ক্ষেত্র পিণ্ডে, ১০৮ ক্ষেত্রে নির্বিচারে বিচারবহু কৃষ্ণের ক্ষেত্রক করে পুরুষে পিণ্ডেন। চৈত্যচরিতে অবস্থার বিচারবহু কৃষ্ণের ক্ষেত্রক করে পুরুষে পিণ্ডেন। চৈত্যচরিতে অবস্থার সার্বভৌমত্ব ভাব একটি উপরেরোগ মুক্তি। বৃত্যাবদ্ধন পিণ্ডেন, চৈত্যচরিতে সার্বভৌমক রচনান।

"কৃত্যাব বেথি" বে কাহিনাট আমি।

উৎসুক বাধাগত দল এখা আহ তুমি।

তোমাতে বে বৈলে লীজকে শূর্প পকি।

তুমি মে নিখেজে পাঠি সার্বভৌম চৈত্যচরিতের কাহে বেথাত্যে বাধা।

বৃত্যাবদ্ধনের গাহে পাঠি সার্বভৌম চৈত্যচরিতের কাহে বেথাত্যে বাধা। তিনি আর 'আচ্যাদামাক মুনহো'। প্রোক্তির বাধা বিচার কোনোটি করেননি। তাপেও চৈত্যচরিতে নকুন-বাধা। বিতে চান:

প্রোক্ত বাধা করে প্রহ করিবা হকার।

সার্বভৌমে হইল বড়তৃষ্ণ অবতার।

কৃষ্ণপুর সর্বাপের প্রমোক্ষিকা বর্জন করা গেল আনা পার সার্বভৌমের "আচ্যাদামাক" বাধার পর চৈত্যচরিতের নিজের মতাহ্যামৌ সহ বাধা নিয়েছিলেন, এই সাথ। মুক্তির উপর চৈত্যচরিতের কৃষ্ণ সার্বভৌম-প্রভুগত বর্ণনা করেছেন, তবে ঐশ্বর বেখিতে সার্বভৌমকে বশ করার কথা দেখা। ২৩। অবশ্য ঐশ্বর সার্বভৌম চৈত্যচরিত-জ্ঞ পাঠি করেছেন পেথতে পাঠি।

কৃষ্ণপুর জ্ঞাব বহাকাবোর বাধপ সর্ণে ও নাটকের বংশ প্রক্রিয়ে চৈত্যচরিতের সাথ দুর্বোধ বিচার ও সার্বভৌমের প্ররোচন বর্ণনা করেছেন। কিন্তু সর্বাপের অবৈত্তবাগ প্রতিমের বিষ্ণুত কোনো বিবরণ নেই। কবিকর্ণপুর "আচ্যাদামাক মুনহো": গোক বাধার উপরে করেননি। পঁয়ক কৃষ্ণপুর কবিকর্ণ চৈত্যচরিতক কাবে স্বামীনামীর বংশ পরিচ্ছেবে চৈত্যচরিতের সুপ্রে বেথেষ্ট-বিচার প্রস্তুর পে শুভিষ্ণুলি পিণ্ডেনেন সেকলি কবিকর্ণপুরের নাটকে অকৃতপক্ষে সার্বভৌমের নিয়েছেই উকি। কেননা নাটকে বেথি সার্বভৌম নিয়েই শেষে চৈত্যচরিতের কাহে এলে তার পূর্বশোধিত অবৈত্তবাগ স্বতেব প্রতি করেছেন। এ ধরণের বচ জ্ঞা উপস্থাপিত করা হেতে পারে। কাজেই বলা যায় 'চৈত্যচরিতামৃত' সার্বনিক তবে 'অমুকের পুর' হতে পারে কিন্তু উৎসুক চরিতকাব্য হয়নি, কোনো কোনো ক্ষেত্রে অথাগত প্রামাণিকতার অভাবে।

চৈত্যচরিতপুরি ছাড়া অকাত পে দৈক্ষবৌদ্ধী এই উচিত হওয়ে সেকলিতে অথাগত প্রামাণিকতার অভাব আবোধ কোরা দেশি। উদ্বেগবোধ কাব্য হিসাবে দৈশান নামের 'অবৈত্তপ্রকাশ' ও নবহরি ভক্তবর্তীর 'অভিজ্ঞাক' ও 'নহোত্তম রিলাস' অধ্যা নিভানবদ্ধনের 'প্রেমবিলাস' আলোচনা করলেই বক্তব্য স্পষ্ট হবে। দৈশান নামবের গাহে প্রথম বচনাকাল (১৪১০ খ্র.)

पर ७ काव्यांश उत्कलित अंगे चैतत्तर्षेवेर कार्यान्वय प्रकृत होते, एवं कि यहां निचैतत्तर्षेर मृदुर नमानो दर्शते।^{१०} उक्ताम कविताकृति चैतत्तर्षाद्य युगे अवाजीन नुवाग 'अस्त्रियार्थ' घोक उक्ताव कवे कावीर प्रवाप्त यतियेहेन। किमाल्लिमित्यप्यद्य! एই अन्ते बला अद्यकाव वाला डाहार चैतत्तर्षोवतो यत्प्रक्षिप्त यथा तुमावनवास, लालावनवास, कणानवास ओ तुमावन कविताकृति इत्याव शुक्र पूर्वक युक्तिप्रक्षिप्त यत्प्रोग लग्या तत्त्वा यत्। तुमावनवासेर उक्त हिलेन नियानवास, ताहै निर्मिते तुमावनवास अग्नव यत्प्रक्षिप्ते 'चैतत्तर्षिति विश्व निर्मिते पूर्वके'। तुमावनवासेव काव्या शक्ते यन्म एव ये एहि काव्या वज्ञाकाले वालाहेन देवकवस्याके नियानवास-विवेदिता येता यियेति। ता ना इत्य समय काव्या इत्य चैतत्तर्षेवेर सम्म एव तावे नियानवास यन्म तत्त्वा इत्य ना। नियानवास-विवेदिता गोधीर उक्तेने तिनि अवैक्येव यत्ता वत्तेनः-

एहि गवित्याहेऽये शाली निया कवे

उक्त शाली नामे 'शाव' श्वेव उपावे।

तेहनि लोडनवास हिलेन त्रिवेत्रे 'पोदनाग्रव' यत्तेव प्रवक्ता नवद्विव नवकाव ठार्हव नित। तिनि तां 'चैतत्तर्षकल' काव्ये उक्त नवद्विवके कोषाल प्रक्षिप्त यथा यान यियेहेन। एवावनवास चोटी कवेहेन नियानवास यदिया प्रतिष्ठाव। लोडनवास यग्नव इत्य नवद्विव-वाहाया वापने—'नवद्विव-चैतत्तर्ष वलिया एव्य वाति'। काव्येहि इत्यनेहि चैतत्तर्ष-चविति इत्याव याधामे निक उक्त यदिया प्रतिष्ठाव इत्य इत्येहेन। अर्वां चैतत्तर्षिति काव्या इत्याहै डावेर एवाव अवाव उक्तेने तिन ना।

अहृष्टप्रावे वायानव तीर्त 'चैतत्तर्षवास' काव्ये ताव उक्त गवावद्यवेर याहाया प्रतिष्ठाव प्राप्तावी। तिनि 'वावाव गविति गोसामिति' काव्या श्वेव एव चैतत्तर्षवास श्वेव लग्याव हन। ताहै गेवेनः

तिविता चैतत्तर्ष-वाव श्व यत्।

शावित्यं वायानव कविल श्वद्य।

अवत्त गवावद्यवेर नमाकै चैतत्तर्षिति देवकव नमाकै एहि उक्त अविति हिल ये, गवावद्यवेर त्रिवापाव अवताव।^{११} वायानव ताहै चैतत्तर्षेवेर मृदु यियेहेनः

आदि गृह्य गवावद्यवेर ले श्वद्यै।

शामि उद्दासीन प्रवाप्त उद्दासीनो।

उक्ताम कविताव 'श्व-शुभार्थ' गोधावीहरे प्रवरद्वना अविताव कवेहेन। चैतत्तर्षेवेर तिरोधानेर पर शोक्तीर देवकव नमाकै तुमावन-केवेर सर्वमात्र कृत्य अतिष्ठित है। उक्त नवद्विवेर देवकव नमाकै उक्तद्योगीति, नामा उक्तेने यतित। तुमावनेर गोधावीहरे युक्तिकृ तुमावन, शोक्त, क्षमानव नक्तेने खेवेहि शुक्र। उक्ताम कविताव तुमावनवासी गोधावीहरे काव्ये निकित ओ रीकित, तिनि तावेरहि याधाम यार्थनिक मत ओ शुक्रितिकै चैतत्तर्षिति विभावृत्त काव्यो रुपाविति कवेहेन। तुमावनवासाकै तिनि 'चैतत्तर्ष-नीलाव वास' वलेण उक्ताम कवितावेर शुक्रितिकै पार्थका लक्ष्मीत।

तुमावनवास तीर्त काव्ये चैतत्तर्षवातावेर काव्ये उक्तप युक्ताव 'शुभवामि शुभ शुभ' तत्कै तुमावन यियेहेन अव एव एविस्कौर्तिसके कलियुप्तेर पर्युक्ते आधात कवेहेन। तिनि शुभातः तावेरते बर्दित इक्षुलीलाव नमे यिलिये यिलिये चैतत्तर्षलीला इत्याव अवास प्रेयेहेन काव्यो आवित्येत। नवद्विव ग्रावित ओ लोडनवास शुहीत 'पोदनाग्रव अव्येह' यिलेन तुमावनवास।

लोडनवास इतित 'चैतत्तर्षवास' काव्ये पोदनाग्रव तद ग्रावित इत्येहेन। तिनि वहकेत्ते तुमावि अव्येह काव्यो अव्याव ओ अव्युपत्त कवेहेन तत्ता तित उक्त नवद्विव याधाम अव्येह यान यियेहेन। ताहै तुमावन, शुभा, श्रीकृष्ण ओ अव्योनीर याधावासाव कवे तिनि नवदीप, तासीती, पोराव ओ नवीना नागवासोर अव्येहेन। गोवावेर विवाहकाले नवीना-नागवासोरे कामयोहित गर्वना गोवानाग्रव अव्येह उक्तेनवाग्या शुहीत्वा।

वायानव शुभावेर उक्त व्यवस्तीत्वा देवग्नेवेर क्षीरोद्ध नागवेर गमन, देवग्नेवेर विभित्ति नामे अव्याहृष्ट अव्युति वर्वना कवेहेन, काव्यो देवग्नेवेर यिलेने शुभालेव मत्तै चलियुप्तवान ओ उक्त पोदाविकृ आधाम (अव्यतिरिक्त, अव्यामिल उपाधान) शुक्रिवेष कवेहेन। आधाम यवलकावोर मत देवदेवी वर्वना, अव्याधाम, नावीनप्ते अव्युतिनिदा, लक्ष्मी उक्तन लोकावाका वर्वना, वारमात्ता, शुहै अव्यानव यवहाव कवेहेन। अव्यानव यिलेवेर कोनो शुक्रिति यियेवे काव्या इत्याहै यवेन नि। चैतत्तर्षवासेर तिनि उक्तवान वा अव्येहमन्त्य अवताव-अव्येह वर्वना कवलेण तिनि चैतत्तर्षवासेर 'वावाव' 'शुभा' वर्वना कवेहेन।^{१२} अव्यानव यिलिये तिरोधानेर उक्तवान उक्ते याधनिकित्य शुभ वाम पदे लेपे। अव्यानव ताव अव्युतिप यवेत्ते चेयेहेन यात्।

वित्त अव्यानव तीर्त काव्ये चैतत्तर्षवासेर जीवनेर ये पवित्र यिलिये-

देखे कि कबे अधिकांश वर्षित जयोहै ऐतिहासिक आमाना नहै। देखन तोंवे तुम्हारीनाम साँव तोकांग नियानामके एवं लोठवालम तोक बोकांग नवहवि सरकार औकूरके छिटपत्रेव हितोप आचारणे पेखावार आमान गोहेहेन, अकूरग चोड़े देखि 'चैत्यतम्भकाम' कावो। शिवेव जपे महाविहार आगमन एवं योवना 'तोव चोव एक आचा', ताव सले 'हूहे वेह एक दैल'—एই रमानाव अटेतातांके शिव-विघ्न युग्म देखानो दयेह। देखक चैत्य-चैतिताम्भेव अकूरगवे विवृत हयेह, ये पाञ्चिपुरवे तुम्हीन आकृष्णगवेर दग्धनाशेर अज अद्येत :

महा कवि आहू तवे देखाय घरण
महाविघ्न मधानिव द्यूहै एक कृप ;
कृप देवि विवग्नेव दैल भावेद्युम् ।
अकूरगम्भ भूलक वत नवहवेर नम् ।

अद्येतेर बोदनी-इना देखानेव कावोव मूर्ख उद्देष्ट नह। देखना अटेताम्भेर मधान वर्नाव पव थेके चैत्यतम्भेवे बोदनेव घटनाहै आवानातः वर्षित हयेह। अमाना अद्यगत आमावेव अज बोदनोकावा हिसावे 'अद्येत-अकूरग' एकेवावेह वार्थ।

नवहविन 'कृष्णद्वाकर' वह 'ठेक' नमुक दुःख यह, किंक एके मर्वर्वामाधक दैवकम्भोक-ग्रह वगलेहै ठिक हय। 'जीविवान आचार्य चरण चित्रा कवि' तिनि 'कृष्णद्वाकर' एह बोना कवेन। एह एहे चैत्य-चैतित वर्षित हयेह, ताव यथो नहुनव किंह नहै। नियानाम-अटेत-नवहवि, जीविवान-नवोत्तम-बोद्धावीर अद्येति वर्निव कोनो ऐनिडा चोधे गते ना। तवे हृष्य ए मंगीत मन्त्राके वह तवा आच। नवहवि अकूरगोने निजव वह पव एहे एहे मंगलित हयेह। बोदनोकावा ए नव, तवे दैवक-ऐतिहासेर दिक थेके मूलावान गह। किंक परवती इना 'नवोत्तम-विलाल' घोटाहूति नवोत्तमेर चरितकावा, अचूर अलोकिक घटनाव आमाना नवेह। एह एकत्र उरेखेहोग्य दिक तुम्हावेर लोकनाथ गोदामीव विवरण। लोकनाथ गोदामी नवोत्तमेर तीकांग छिलेन। खेतुरीव महोदय (१४८१-८२), बड़विग्रह आमान, इन-कौरिनेर नहै अद्येति वर्ना आमालिक वले ग्राह हते गावे।

नियानामेर कनिष्ठापनी आह्वावेहीर लिङ नियानामाम ऋचित 'ग्रेमविलाल' लक्ष्मण शतकेर कावा। आह्वानि अकूरगके दैवव-

बोदनीवाहै। एह आमालिक दूल 'द्येष्ट। लेवक आविवेहेन ए नव वाढेवके अनेवेहै निवेद उद्यव आमाने आवाने हयेहिलेन। चैत्य-नियानाम-अटेत, जीविवान-नवोत्तम-आमान, तुम्हावेर गोदामीहूल ए लोकीय वराहवेर बोदनेर वह तुम्हाव बोकाव वर्षित हयेह। किंक तावेर शताता नवर्धा बोकाव नव। मृदाल घरण दीव हावीवेत दैवत्तम्भ वर्षित शाव-ग्रहावि ए चैत्य-चैतिताम्भ नुस्तनवारा। अने फकाल कविवाजेर नुस्तन तावाति विचारेर घोडेला वावे। आवान अक्ति-आकृष्ण, अविवाक घटनाव नवाहाव घोडेल 'ग्रेमविलाल' दैवव-उद्यवेव बोदनीव उपाधान-ग्रहवणे गृहीत हते गावे।

वह बोदनोकावा इना देखिलेन दैववेह। शूर्वेहै बला हयेह एहे कावात्तिव आवान उक्तेर छिल चैत्य, नियानाम, अटेत ग्रहृति धर्मत्तम्भेव दैववेह वा अवतारव दृक्तावेर अतिपात्र आव तावहै नवे जीविवान-नवोत्तम-आमानाम वा अक्ताव गोदामीहूलेर कविति वा आवोपित यवण निर्वाण। तावै नियानाम-पूज देवत्तम्भ एहू जीविवान आचार्यके वलेन :

आमि नियानामेव शक्ति गृहि चैत्यत्तम्भ ।

कृष्ण आमि एक वज्र आमाना आवेव ॥३॥

एह दैवव वा अवतारव ग्रहिता गाविव तोवा अविचल हिलेन। आकृष्णगत शानित इश्वरम्भाजेर अतिवर्धी शक्ति हिसावे नुत्तन धर्मपोक्तिके अतितित कविते गेले चैत्य-नियानाम-अटेतेव शहिमा ए दैवव आमाल अविवात। देहेहू मे-त्वं 'शाव-आमाना' तिव अज किंह शौक्त दृष्ट हय न। देखेहू मे-त्वं 'शाव-आमाना' तिव अज किंह शौक्त दृष्ट हय न। देखेहू मे-त्वं 'शाव-आमाना' तिव अज किंह शौक्त दृष्ट हय न। शेवत विभिव शाव, पूर्वा, शुक्ल-प्रव थेके उक्त उद्येष्टेव अकूर घोड़ा घोलके निपूलावेर जनन कवराव चोड़े उलेहे। शू 'शाव-आमाना' शावा दैवव वा अताव शूक्ति अपिता कवा वाई न। अलोकिक शक्तिसम्पन्न कवे ना देखावे पाहले दावो। चरितहै डथ, विश्व वा अजा उद्येष्टम हय न। कावेहै शूराव ए मधलकावोव वेव-सेवी उद्येष्टेर यतो दैवत्तम्भवित कावो वर्षित धर्मप्रवादेर कथेन। वा आमी अलोकिक शक्ति वर्षित हयेह। देखिन दैवव मधानेव नाथक ए धर्मत्तम्भवित सेवित नेतादेव अक्ति-मानव-शरित्तर अतितित हय न। जीविवान हये उत्तोहिल। तत्र अलोकिक, अविवाक घटनावान एवन कि कोनो देवते अप्रकृत तद्यवर्तन वा हात्तकर शुक्तिकाल आवर्तन नवेह एवजिव मृत्यु शौकृत हय न। ३० चैत्यत्तम्भेव एवं अक्ताव दैवव-धर्मत्भ ७

সাধকদের জীবনের মোটামুটি পরিচয় এগলি খেকে শাও করা অসম্ভব হয় না এবং বৈকল্পিকভাবে ইতিহাসও অপরিজ্ঞাত থাকে না। এই শুধু মধ্যামৃতের 'Saint'সের চরিতপ্রাণিতে সম্পর্কে সমালোচক করের মতো আবশ্যিক

Though the lives of the Saints are fitted with miracles and incredible stories, they form a rich mine of information concerning the life and customs of the people. Some of them are memorials of the best men of the times.

একথা অবক্ষেত্রে যে প্রৌষ্ণ, মানব-পূরী (Humanistic) মৃষ্টি নিয়ে বৈকল্পিক 'ক্লকচার্ট' প্রথম করেছিলেন সে-মৃষ্টিভূক্তি মধ্যামৃতের ভক্ত বৈকল্পিক কর্ম আশা করা দুর্ব্যাপক। তাদের পক্ষে এবাসী পরিচিতিটির ক্ষেত্রে (Comic) ৭ তার অহঙ্কারী অন স্টুর্মার্ট পিলেন পিল্ট^{১১} বৈকল্পিক মতে 'লোকাচার ও মেশাচার'র উরে' উরে' উরে' বলা কি সম্ভব ছিল :

"জুড়িবান পাঠিবকে টেওঁ বলা বাহল্য বে, মৎস, কুম, বৰাহ, উদি'হ প্রচুরি উপজ্ঞানের বিবরণেছু গন্ধগুণের দৈশ্বরাবতাবরের ধ্যার্থ মারি মা বলা কিছুট নাই। ধ্যার্থার দেখাইব বে, বিকুব মশ অবতাবের কথাটা অশেষাকৃত আধুনিক এবং সম্প্রসরণ উপজ্ঞানমূলক। মঙ্গ বটে, এই মকল অবতাব পুরাণে কৌতুক থাকে, কিন পুরাণে বে অনেক অলীক উপজ্ঞান হান পাইয়াছে তাহা বলা বাহলা। প্রচুর বিচারে শ্রীকৃষ্ণ তির আব কাহাকেও দৈশ্বরে অবতাব বলিবা যৌকাব করা থাপ না।"

বৈকল্পিক তার বিচারের নিয়ম সম্পর্কে ডিমটি শব্দ উল্লেখ করেছেন,
"১। শাহ প্রক্ষিপ্ত বলিয়া প্রয়াণ করিব তাহা পরিত্যাগ
করিব।

২। শাহ অতিপ্রস্তুত তাহা পরিত্যাগ করিব।

৩। শাহ প্রক্ষিপ্ত নয় বা অতিপ্রস্তুত নহ, তাহা থে
অভ্যন্তরাকারে যথায় লক্ষণযুক্ত দেখি, তবে তাহাও
পরিত্যাগ করিব।"^{১২}

বাংলারেখের উনবিংশ শতকের বেলেন্স-স্টোরে 'প্রক্ষিপ্তশৈলি' বৈকল্পিক
পরিচিতিভূক্ত প্রচারিত মুক্তিধর্মী মনের মে-পরিচয় দিয়েছেন তার 'ক্লকচার্ট'

এই রচনাটা, সেই মৃষ্টিভূক্তি করে আশা করে মধ্যামৃতের বাংলারেখে ভজিবিক্রি
'চৈতন্য-চরিত' কাব্যান্বিতে।

পার্শ্বটীকা

- ১। চিটিপত্র (১২২৭) বৈকল্পি রচনাবলো, বিতোয় ৬৩ (বিদ্যারাজী সং।)
আবও লিখেছেন : "তেমনি শাহাবের বড় প্রাণ তাহারা বেশিমি
নিষেহ বধে বৰ দৈশ্বা ধাকিতে পারেনা, কগতে যাপ্ত হৈতে চায়।
চৈতন্যের ইহার প্রয়াণ" —তবেব।
- ২। শৈক্ষিকচতুর্ভুজিতামৃত। ১৪ অক্টোবর, ২৪শ সৰ্গ, ১-১১।
- ৩। তবেব। ১ম অক্টোবর, ২৪শ সৰ্গ, ১০-১৫।
- ৪। 'Hagio' শব্দের অর্থ Saint, ধর্মের জন্ত বিনি প্রোগ্রাম করেছেন।
কালেই Hagio-graphy বলতে আমরা 'নৃচরিত' বুকেতে পারি।
এগুলির মধ্যে লেপিটা 'writings inspired by devotion and
intended to promote it.'
- ৫। 'Every martyr as a rule is animated by the same
sentiments, expresses the same opinions and is subject to
the same trials' (Legends of the Saints. An Introduction
to Hagio-graphy. Pere H Dele-haya S. J. Bollandist.
Translated by Mrs. V. M. Crawford, 1907)
- ৬। চৈতন্যাগবত, মধ্য, ২৩ অধ্যায়।
- ৭। তবেব। মধ্য, ২০শ অধ্যায়।
- ৮। তবেব। মধ্য, ২১শ অধ্যায়।
- ৯। চৈতন্যমৃত, আবানৰ, আদিবৎ। আবানৰ শ্রীবামুচ কর্তৃক পারামু-
অহল্যা-উচ্চারের অফুরণে শ্রীচৈতন্য কর্তৃক পারামু-তিলোক্যা-উচ্চার
বর্ণনা করেছেন।
- ১০। নহোত্তম-বিলাস, ১০ম বিলাস।
- ১১। প্রেমবিলাস, ১২শ বিলাস।
- ১২। চৈতন্যচরিতামৃত, আবানৰীলা, ১১শ অধ্যায়। ইং মুহারি ৪৪ ২২
পৃষ্ঠা ১০।
- ১৩। ভজিবনামুত্তমিকু, উচ্চলোকসম্পর্ক, চৈতন্যচোপনামটক, বিদ্যমান